



CHARMINAR®
PAINT BRUSH
Cell : 9440297101

वर्ष-28 अंक : 84 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टनम, तिरुपति से प्रकाशित) आषाढ कृ. 9 2080 सोमवार, 12 जून 2023

Ghar Ka Doctor

MY Dr. Headache Roll On
HEADACHE GONE WITH MY DR ROLL ON 100% ग्राहकृतिक
For Trade Enquiry : 8919799808 www.mydrpainrelief.com

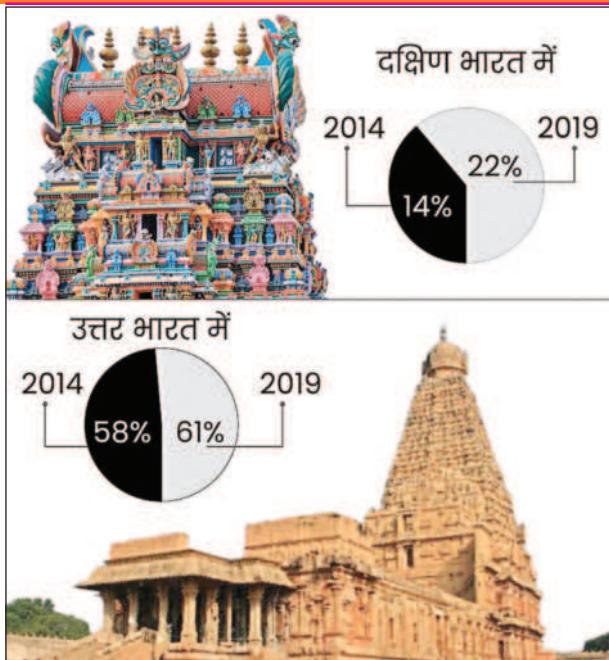
प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

देश के मंदिरों पर भाजपा का फोकस

सर्वे में खुलासा- जिन मोहल्लों में मंदिर, वहां भाजपा आगे, दक्षिण में इसका उलटा

नई दिल्ली, 11 जून (एजेंसियां) देश की सियासत में मंदिरों के किनती भूमिका है, इसे समझने के लिए भाजपा ने राष्ट्रीय स्तर पर एक सर्वे कराया है। साथ ही पिछले दो लोकसभा चुनावों के बाटों टेंड का बारीकी से अव्ययन किया है। इसमें सामने आया कि जिन इलातों में कोई मंदिर है, वहां आसपास के बूथों पर भाजपा बेहतर प्रदर्शन करती है।

लेकिन, यह टेंड कर्नाटक को छोड़कर दक्षिण भारत में नहीं है। इसी समस्या का हल तालाबों के लिए भाजपा मंदिरों के आसपास के बाटों की सिलसिलेवार मैपिंग करा रही है। किंतु यादों भाजपा को उत्तर, मध्य, पश्चिम और पूर्वोत्तर राज्यों में मंदिरों की वजह से मिलता है,



पीएम ने नेशनल ट्रेनिंग कॉन्क्लेव का इनॉर्गेशन किया

नई दिल्ली, 11 जून (एजेंसियां) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को देश के पहले नेशनल ट्रेनिंग कॉन्क्लेव का इनॉर्गेशन किया। यह कार्यक्रम दिल्ली के प्रगति मेंदान स्थित इंटरनेशनल एजेंसिशन और कन्वेशन सेंटर में आयोजित किया गया था। इस मौके पर प्रधानमंत्री ने अलग-अलग ट्रेनिंग इस्टीचूट के 1500 रिप्रेजेंटेटिव्स को संबोधित भी किया। नेशनल ट्रेनिंग इस्टीचूट का मकसद सिविल सर्विस ट्रेनिंग इस्टीचूट के बीच कालैबोरेशन को बेहतर करना ही है। इस कॉन्क्लेव से ट्रेनिंग इस्टीचूट के बीच कालैबोरेशन बेहतर होगा। इसमें सेंट्रल ट्रेनिंग इस्टीचूट और रिसर्च इस्टीचूट के लिए जानना चाहो है। इसके लिए मिशन कर्मयोगी की भी शुरुआत की गई है। पालिसी और गवर्नेंस में सुधार के लिए जरूरी है कि सिविल सर्वेंट को बेहतर ट्रेनिंग देकर उनके स्किल को निखारा जाए।

यूनिफॉर्म सिविल कोड का दस्तावेज तैयार

इस रिपोर्ट के आधार पर केंद्र सरकार समान नागरिक संहिता का बिल तैयार करेगा



नई दिल्ली, 11 जून (एजेंसियां)। करीब 8 महीने मैराथन बैठकों के बाद लॉ कमीशन ने यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीपी) पर डिटेल दस्तावेज तैयार कर लिया है। एक-दो बैठकों में अंतिम मुहर के बाद इसे मानसून सत्र में पहले कानून भवाल का सौंपने की तैयारी है। इस रिपोर्ट के आधार पर ही केंद्र सरकार समान नागरिक सहिता का बिल तैयार करेगी। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि इस बारे में विधेयक कब लाया जाएगा। सभी धर्मों के रीति-रिवाजों का अध्ययन करने के बाद बनाया गया है।

>14

अमरनाथ यात्रा को लेकर सुरक्षा सम्मेलन

नई दिल्ली, 11 जून (एजेंसियां)। अमरनाथ यात्रा की सफलता के लिए नागरिकों और सुरक्षा एजेंसियों के बीच तालमेल, बातचीत और समन्वय बढ़ाने के लिए श्रीगंगार में सुरक्षा बलों और नागरिक प्रशासन के अधिकारियों का एक सुरक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया।

अमरनाथ के 3,880 मीटर ऊंचाई पर स्थित पवित्र गुफा मंदिर की 62 दिनों तक चलने वाली यात्रा एक ज़्यादा बुरी जा रही है।

ऐसा इसलिए, क्योंकि देश के हर विधानसभा क्षेत्र में 485 मंदिर हैं। मंदिरों के आसपास की अबादी की मैपिंग का काम देख रही कोर्टी टीम के एक पदाधिकारी के अनुसार, देश के हर विधानसभा क्षेत्र में औसतन 485 मंदिर हैं।

एक लोकसभा क्षेत्र में औसतन 3,683 मंदिर पड़ते हैं। थोड़ा और बारीकी से देखें तो हर गांव में औसतन 3.5 मंदिर हैं। >14

पुलिस ने 2 पहलवानों से बृजभूषण के खिलाफ सबूत मांगे

कहा- यौन शोषण के फोटो, वीडियो और ऑडियो दें, 15 को दाखिल होगी चार्जशीट

पानीपत, 11 जून (एजेंसियां)। दिल्ली पुलिस ने भारतीय कुररी सम (डल्लूपूर्फआई) के पूर्व अध्यक्ष पर स्थित पवित्र गुफा मंदिर की 62 दिनों तक चलने वाली 2 महिला पहलवानों से यौन शोषण के फोटो और ऑडियो-वीडियो सबूत मांगे हैं। दिल्ली पुलिस को इस काम में 15 जून तक कोटि में चार्जशीट पेंडन्स की है। पुलिस ने लालवानों से मांगे ये सबूत... *

* यौन शोषण की घटनाओं की एक पहलवान बृजभूषण के कार्यालय के दौरान रखी थी। * एक पहलवान और समय, डल्लूपूर्फआई कार्यालय में उनकी यात्राओं की अवधि। * पहलवानों के रूममेंट के कार्यालय की बारे में जानकारी मांगी। काहि



महिलाओं-बच्चों से हथियार सप्लाई करा रही आईएसआई

आर्मी का दावा- आतंकियों को मैसेज भेजने में लड़कियों का इतेमाल हो रहा

श्रीगंगार, 11 जून (एजेंसियां)। एजेंसीज और सुरक्षावालों ने आतंकियों के स्लीपर सेल पर तेजी से कारबाई की है। जिसके बाद जग्मी-कमीर में एक्टिव आतंकियों के मैसेज भेजने के लिए सुरक्षावालों को नाकाम करने के लिए ज़रूरी तरीकों का उपयोग किया जाता है। नाकामी के लिए महिलाओं और बच्चों का लेस्ट्रिनेंट जनरल औजला ने आतंकी संगठनों ने टेरर एक्टिविटी के लिए महिलाओं और बच्चों का सांस्कृतिक योग्यता ने आतंकी गतिविधियों के लिए टेरेक्ट यानी टेक्निकल इंटीलीजेंस का उपयोग कम कर दिया है। यानी वे अब बातचीत या मैसेज भेजने के लिए मार्बाइल जैसे साधनों के इस्तेमाल से बच रहे हैं वे अब पारंपरिक साधनों का उपयोग बढ़ा रहे हैं। >14

MARUTI SUZUKI ARENA

2 500 000 THRILL SEEKERS.

1 LIMITLESS LEGACY.

SWIFT

BELIMITLESS

ALSO AVAILABLE VIA SUBSCRIPTION. SCAN TO KNOW MORE.

www.marutisuzuki.com/subscribe

SWIFT ₹49 100*
तक की बचत

SWIFT

E-book today at www.marutisuzuki.com or visit your nearest Maruti Suzuki dealership. | Maruti Suzuki vehicles are now available under CSD & CPC* | For bulk order, mail at: nishant.vijayvergja@maruti.co.in.

AUTHORISED DEALERS: **TELANGANA STATE:** VARUN: (NIZAMBAD) CALL: 8462236236, (KARIMNAGAR) CALL: 0878-2950555. HYDERABAD: ADARSHA: (ATTAPUR) CALL: 8897973366, (KARMANGHAT) CALL: 8297576633. KALYANI MOTORS: (NACHARAM) CALL: 9100102157, (LB NAGAR) CALL: 9100102157. GEM MOTORS: (KONDAPUR) CALL: 9272506060. ACER: (TIRUMALGIRI) CALL: 9154073240. AUTOFIN: (BOWENPALLY) CALL: 040-67292222. JAYABHERI: (GACHIBOWLI) CALL: 8100823456. PAVAN: (SECUNDERABAD) CALL: 7093711199. VARUN: (BEGUMPET) CALL: 040-44607676, (BANJARA HILLS) CALL: 040-44887676, (KUKATPALLY) CALL: 040-44587676, (VANASTHALIPURAM) CALL: 040-24029979, (GACHIBOWLI) CALL: 040-49497676. RKS: (SOMAJIGUDA) CALL: 9848898488, (MALAKPET) CALL: 9848898488, (SECUNDERABAD) CALL: 9848898488, (KUSHAIGUDA) CALL: 9848898488. MITHRA: (HIMAYATHNAGAR) CALL: 040-27634444, (MEHDIPATNAM) CALL: 7799884949. SAI SERVICE: (ERRAGADDA) CALL: 7331168888, (IBRAHIMPATNAM) CALL: 7331168888. E-OUTLETS: SAI SERVICE: (SANGAREDDY) CALL: 7331168888. ADARSHA: (SIDDIPET) CALL: 9581656633. VARUN: (MEDAK) CALL: 9703656111. AUTOFIN: (MEDCHAL) CALL: 8885040034. PAVAN: (IBRAHIMPATNAM) CALL: 7093711199.

*Offer includes consumer offer, retail support, exchange bonus and ISL/ Corporate offer (wherever applicable) on select models/variants. *Terms and conditions apply. Creative Visualization. The terms and conditions are subject to change without any prior notice. All offers are brought to you by Maruti Suzuki dealers only. Offers may vary from variant to variant. All offers shown are valid for limited period & for limited stock only. For more details, please contact your nearest ARENA dealership. Accessories and features shown in the pictures may not be a part of the standard equipment and may vary according to the variant. Black glass shade on the vehicle is due to lightening effect. Colors shown may vary from actual body colors due to printing on paper. Images used are for illustration purposes only. Cumulative sales. Maruti Suzuki India Limited reserves the right to discontinue offers without notice. Maruti Suzuki Subscribe is available in Hyderabad only. Above offer is valid till 30 June 2023.

खतरनाक बिपरजाँय चक्रवाती तूफान की 15 जून को गुजरात के तट से टकराने की संभावना

नई दिल्ली, 11 जून (एजेंसियां)। चक्रवाती तूफान बिपरजाँय पूर्व-मध्य अरब सागर के ऊपर 5 किमी प्रति घण्टे की गति के साथ उत्तर की ओर बढ़ रहा है। इस बारे में जानकारी देते हुए भारत मौसम विज्ञान विभाग आईएमडी ने कहा कि अगले 6 घण्टों के दौरान अत्यधिक गंभीर चक्रवाती तूफान के रूप में इसके और तेज होने की संभावना है। आईएमडी के अनुसार, चक्रवात बिपरजाँय के लगभग उत्तर की ओर बढ़ने और 15 जून को एक बहुत ही गंभीर चक्रवाती तूफान के रूप में पाकिस्तान और अस-पास के सौराष्ट्र-कच्छ तटों तक पहुंचने की संभावना है। इस बीच, कर्णाची पोर्ट ट्रस्ट (केपेटी) ने 'पैट अलर्ट' जारी किया है क्योंकि पूर्व-मध्य अरब सागर के ऊपर चक्रवात बिपरजाँय अपनी तीव्रता बनाए हुए है। महानगर के दक्षिण में लगभग 900 किलोमीटर दूर होने का अनुमान था। कर्णाची पोर्ट ट्रस्ट ने वीएसपीएस बिपरजाँय के लिए राजन जहाजों और बंदरगाह सुविधाओं की सुरक्षा के लिए 'आपाकालीन दिशनिंदेश' जारी किए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, केपेटी ने एक



बयान में कहा कि शिपिंग गतिविधियां निलंबित रहेंगी। एक बयान में, ट्रस्ट ने घोषणा की कि 25 समुद्री मील से ऊपर तेज हवाओं के मामले में शिपिंग गतिविधियां निलंबित रहेंगी। आगे कहा कि अगर हवा की गति 35 समुद्री मील से ऊपर हो, तो मालवाल केंटर टर्मिनल पर जहाजों की डबल-वॉर्किंग पर भी संवर्धित लगा दिया। इससे पहले शनिवार को कर्णाची प्रशासन ने अति गंभीर चक्रवाती तूफान (वीएसपीएस) 'बिपरजाँय' के खतरे के महेनजर धारा 144 के तहत मछली पकड़ने, नौकायन, तैनां और समुद्र में नहाने पर प्रतिवध लगा दिया था। असिस्टेन्चन के अनुसार, जहाज के ड्रूबने या किसी भी अतिय घटना से बचने के लिए, वह निर्धारित लिया गया है। आदेंओं की अवहेलना करने पर संवर्धित उपयुक्तों व सहायक आयुक्तों को कार्रवाई के लिए अधिकृत किया गया है।

महिला-पुरुष का टूटता भरोसा

नारों और पुरुष के बीच पनपता आकर्षण जब आपस में एक साथ रहने को मजबूर कर देता है तो क्या कारण है कि थोडे दिनों बाद ही सहजीवन में जौने वाला यहीं जोड़ा एक दूसरे के खून के प्यासे तक हो जाते हैं। यहां तक कि महिला को मारने के लिए कूरता की हद तक पार कर जाते हैं। मुंबई महानगर के भवयंदर इलाके में एक महिला की कूरतम हत्या की जो प्रकृति उजागर हुई है, उसने यह सोचने को मजबूर कर दिया है कि कोई आदमी भला इतने निचले हद तक कैसे जा सकता है। वह भी उसके साथ जिसने अपना सबकुछ छोड़ कर उसके साथ रहने को ही अपना मक्सद बना लिया था। बता दें कि यहां जिस महिला की हत्या की हम चर्चा कर रहे हैं। वह अपनी उम्र से करीब 22 साल बड़े पुरुष के साथ लिव इन रिलेशन में रह रही थी। जाहिर है, कोई महिला किसी पुरुष के साथ संबंधों के इस स्वरूप में साथ रहने का फैसला तभी करती है जब उसे उस पर पूरा भरोसा हो। लेकिन इस मामले यहां शायद ऐसा नहीं हुआ। क्योंकि साथ रहने के कुछ मर्हने बाद ही अधेड़ पुरुष ने अपनी सहजीवन साथी की हत्या कर दी। मामला केवल हत्या तक होती तो गनीमत थी। उसके बाद उसने जो कूर रखवा अपनाया वह दिल दहला देने वाला है। खबरों के मुताबिक आरोपी ने इलेक्ट्रिक आरीरे से महिला की लाश के घर में ही कई टुकड़े करके, कुकर में उबाल कर उसे कुत्तों को खिला दिया था। सोसायटी में जब इसकी दुर्गंधि फैली तो कुछ पड़ोसियों ने पुलिस को सूचित कर दिया। जब पुलिस पहुंची तो शव के कुछ ही हिस्से बचे थे। जिससे आरोपी पकड़ा गया। मुंबई के सामने जब इस घटना की खुलासा हुआ तो उसका भी मुंह खुला का खुला रह गया। ऐसे मामलों में एकबारी विश्वास करने में वक्त लग जाता है। आखिर एक सामान्य दिखने वाला इंसान कैसे ऐसा हो जाता है कि अपनी ही साथी को मार डालने के बाद खुद बचने के लिए कूरता की सारी हदें पार कर गया। ताज्जुब है कि सब कुछ साफ होने के बाद भी आरोपी अपने बचाव में तरह-तरह की दलील पेश करता रहा, लेकिन पुलिस ने उसे गिरफ्त में ले लिया। बीते कुछ समय से अक्सर ऐसी घटनाएं सामने आ रही हैं, जिनमें

लिव इन रिलेशन में रहने वाले पुरुष अपने महिला साथी की जान तो ले लेते हैं लेकिन उसके बाद खुद को बचने के लिए बहुत ही कूर तरीका अपना कर खुद को बचाने की कोशिश करते हैं। ऐसा करते समय वह संवेदनहीनता की सारें हड्डें पार कर जाते हैं। ज्यादा समय नहीं बीता है जब दिल्ली में भी एक ऐसा ही वाकया सुखियों में आया था, जिसमें एक युवक ने अपनी सहजीवन साथी की हत्या करके उसके शव के पैरीस टुकड़े करके उसे ठिकाने लगाने की कोशिश की थी। हत्या की आम घटनाओं के सामने ऐसी घटनाओं की प्रकृति पर गौर करने पर यही लगता है कि ऐसे अपराध को अंजाम देने वाला व्यक्ति अपने साथ रही महिला के प्रति न सिर्फ पूरी तरह संवेदनहीन होता है, बल्कि स्वकेंद्रित और अपनी सुविधा की जिंदगी जीने का आदी हो जाता है। ऐसे में वह कई तरह की हिंसक कुटाओं से घिर जाता है, जो उसे लगातार मानसिक रूप से विकृत बनाती रहती है। ऐसा ही शख्स खुद पर भरोसा करने वाली स्त्री के खिलाफ भी बेहद बर्बर हो जा सकता है। बता दें कि अपने देश में अभी भी लिव इन रिलेशन का चलन विदेशी जैसा नहीं चल सका है। खासतौर पर महिलाएं अगर किसी पुरुष के साथ इस तरह रहना तय करती हैं तो कई बार वह अपने अस्तित्व को लेकर सजग रहती हैं और अपनी सुरक्षा सहित हर मामले में उस पर पूरा भरोसा करती हैं। लेकिन यह जीवनशैली चुनने वालों में पुरुष अपने पितृसत्तात्मक कुठाओं से इस तरह घिरे रहते हैं कि वे अपने सामने किसी महिला के अस्तित्व की कद्र ही नहीं करते। वह अपनी सुविधाओं की राह में किसी भी महिला को रोड़ा नहीं बनने देना चाहते। पुरुषों की इस तरह की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक जटिलताओं का खमियाजा अंततः स्त्रियों को ही उठाना पड़ता है। जाहिर है, अभी सरकार से लेकर समाज तक को ऐसे अपराधों से कानूनन निपटने के अलावा कई और पहलू पर विचार करने की जरूरत है। सबसे ज्यादा कानून-व्यवस्था के मोर्चे पर कुछ ठोस कदम उठाने की जरूरत है, ताकि अपराधिक मंशा रखने वाले लोगों के भीतर कानून का डर बना रहे।

મહારાજા સૂરજમલ દૂરદર્શી યોદ્ધા થે



इत हा स
का ऐसा
महान योद्धा
जिसे इतिहास
में दुर्भीवना के
चलते उचित
स्थान नहीं
दिया गया।

आभयान म उनका लड़ाका साला
बलराम सिंह जिसके नाम पर
बल्लभगढ़ बसाया गया है, कंधे से
कंधा मिलाकर साथ दिया था।
सही माने में तो महाराजा ने मुगल
सल्तनत को दिल्ली शहर और
उसके आसपास के थोड़े से इलाके
में ही समेट दिया था।

भरत पुरुष रियासत के महाराजा सूरजमल कभी भी युद्ध नहीं हारे थे। उन्होंने 12 जून 1761 को मुगलों को परास्त करने के बाद आगरा और लालकिला पर कब्जा कर लिया था। यह कब्जा जाटों का दस सालों से ज्यादा समय तक सूरजमल के पुत्र जवाहर सिंह की मृत्यु तक बना रहा। महाराजा के पिता बदन सिंह ने अपने जीवित रहते ही होनहार सूरजमल को शासन की मशहूर इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने 'डिक्टेइन ऑफ मुगल एम्पायर' और प्रोफेसर कानूनों ने अपनी किताब 'द हिस्ट्री आफ जाट' में विस्तार से वर्णन किया है। कांग्रेस के दिग्गज और पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह ने भी 'महाराजा सूरजमल' किताब में भी महाराजा द्वारा मुगलों की आन बान शान के प्रतीक मुगलों की दूसरी राजधानी आगरा और किले पर कब्जे करने का वर्णन विस्तार से किया है।

बांगडोर दे दी थी।
बदन सिंह बेहद धार्मिक प्रवत्ति के थे उन्होंने अपना अंतिम समय अपने द्वारा बनवाये गए ढीग किले में भगवान् कृष्ण की भक्ति में गुजारा था। सुरजमल लंबी काठी के थे। युद्ध तो उनके लिये जैसे खेल ही द्यो।

जब मराठा सरदार मलहार होल्कर ने धन की लालच में भरतपुर राज्य के कुम्हेर किले की घेराबंदी की तो किले पर तैनात जाट सैनिकों ने भी गोलियां बरसाईं। इसी गोलीबारी में मलहार होल्कर का पुत्र और अहिल्याबाई के पति योदेश्वर होल्कर मार गया।

खल गा हा ।
बदन सिंह के कुछ प्रारंभिक
युद्धों को छोड़कर सभी युद्धों को
उन्होंने ही लड़ा था। ज्यादातर
उनके युद्ध मुगलों के खिलाफ ही
लड़े गए थे। उन्होंने अपने राज्य
का विस्तार राजस्थान के भरतपुर,
अलवर, मेवात सहित काफी

के पात खाड़ेराव हालकर भारा गया
इस घटना से सूरजमल दुखी
हुए और उन्होंने गोलीबारी करने
वाले जाट सैनिकों को खरी खोटी
सुनाई तथा खांडेराव की मौत पर
अफसोस जताते हुए महाराजा
सूरजमल ने मल्हार होल्कर को
शोकवस्त्र और पत्र भेजा।

इलाके में किया था। पश्चिम में राजधानी दिल्ली और उसके आसपास के कुछ इलाके छोड़ दे तो लगभग पूरा हरियाणा, आगरा से अलीगढ़, खुर्जा , बुलंदशहर, मेरठ तक सूरजमल ने अपनी विजय पताका फहराई थी। पूर्व में फर्खाबाद, मैनपुरी, फिरोजाबाद, एटा , इटावा तक सूरजमल का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष नियंत्रण था। सूरजमल के विजय बड़े अचरज की बात है कि इतिहास की इतनी बड़ी जाटों से सम्बंधित सत्य घटनाओं को किसी भी मुस्लिम और वामपंथी इतिहासकार ने नहीं लिखा । न जाने कितने मुस्लिम और वामपंथी इतिहासकारों जैसे इरफान हबीब , लर्ड अहमद, हरिश्चन्द्र वर्मा, सतीश चंद्र ने मुगल इतिहास पर भरपूर कलम चर्चाई है।

રઘુ ઢાકું

अंततः नये संसद भवन का लोकार्पण 28 मई 2023 को संपन्न हो गया। लोकार्पण के मुख्य अतिथि या लो का पर्ण कर्ता नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री रहे, या श्रीमती द्वापदी मुर्मू कुछ दलों ने शुरू करे देश में इस समय की भूमिका अंधे रोध की बनी हुई है जिन पर देश में उन पर चर्चा नहीं कृत्रिम भावनात्मक एक दंव पेंच हर मुद्रा प्रतिपक्षी दलों ने यह गर्पण राष्ट्रपति द्वारा ने यह भी कहा की अपमान है। इसके नुच्छेद 79 का जिन नेतृत्व संसद के सत्र और संसद के संयुक्त दायित्व व अधिकार कारण लोकार्पण का होता है। यह बात के मुताबिक सरकार नेतृत्व राष्ट्रपति के तरीके सत्र राष्ट्रपति के है। देश के राष्ट्रपति के तरीके हैं। परन्तु यह भी एक संविधान राष्ट्रपति के तरीके हैं। परन्तु यह भी लोकार्पण के मित्र भूल गये कि जब देश में आपातकाल लगा था तब प्रधानमंत्री की सलाह पर ही राष्ट्रपति जी ने बगैर मंत्री मंडल के बैठक के निर्णय पर हस्ताक्षर कर दिये थे। स्व. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब ने तो विदेश यात्रा में रहते हुए विधानसभा भंग के निर्णय पर हस्ताक्षर कर दिये थे। दूसरी बात यह है कि, आदिवासी राष्ट्रपति श्रीमती द्वापदी मुर्मू हो या अनुसूचित जाति से रामनाथ केविंट हो इनका चयन भा.ज.पा. और प्रधानमंत्री श्री मोदी ने ही किया था। बल्कि प्रतिपक्ष ने तो इनके खिलाफ प्रत्याशी भी खड़े किये थे। अगर उस समय प्रतिपक्ष ने इनका समर्थन किया होता तो प्रतिपक्ष के द्वारा इनके अधिकार और सम्मान की रक्षा का नैतिक आधार अधिक होता और शायद जनविश्वसनीय भी होता। परन्तु चयन करते समय विरोध और फिर उनके सम्मान में राजनैतिक लडाई लड़ना यह उचित भी नहीं है और जनभावना के अनुरूप भी नहीं है। अगर भारत सरकार और प्रधानमंत्री राष्ट्रपति जी से लोकार्पण करते तो मुझे खुशी होती और एक निरर्थक विवाद के विषय से बचा जा सकता था, परन्तु प्रधानमंत्री जी का भी स्वभाव एकाधिकारवादी है कि जो हमने तय कर लिया वही सही है। और तो और उसे कोई चुनौती नहीं दे सकता। अगर वे ऐसा करते तो प्रतिपक्ष भले ही अपनी पीठ ठोकता या फिर हो सकता है कि किसी और आधार पर उसका भी विरोध करता परन्तु प्रधानमंत्री जी का सम्मान देश में बढ़ता और उनकी धूमिल होती लोकतांत्रिक छवि शायद कुछ सुधर पाती।

परन्तु प्रधानमंत्री जी के स्वभाव में या विचार में लोकतांत्रिक भावना ने उनको दूर-दूर तक स्पर्श नहीं किया है। वे इतने प्रचार उन्मुख और ईवेंट मैनेजर हैं कि वह हर घटना या काम को अपना काम बताने का या दुनिया में हमने पहली बार किया यह प्रचारित करने का, अपने फोटो छपवाने और शिलालेख लगवाने का उनका मानसिक शोक इतना ज्यादा हो गया है कि वह एक प्रकार मनोरोग जैसा बन गया है। अभी कुछ माह पूर्व उन्होंने दक्षिण अफ्रीका से चीते मंगाये थे, जो म.प्र. के कुनो नेशनल पार्क में छोड़ गये थे। अब कोई चीत हिन्दुस्तान में पहली बार आने वाला या कभी भी न पाये जाने वाला जीव नहीं है। बल्कि चीते हमारे यहां सैकड़ों वर्षों से जंगलों में थे। जिन्हें कुछ राजा महाराजाओं ने, शिकारियों, व्यापारियों ने बाद में मारकर कम किये। परन्तु अफ्रीका से मंगाकर चीते छोड़ने की खबरे राज्य के मीडिया में बड़े-बड़े विज्ञापनों के माध्यम से दिखाई गई या छपवाई गई। मध्यप्रदेश सरकार लगभग एक सप्ताह तक कूनों अभ्यारण में बनी रही। सारे हिन्दुस्तान के मीडिया में ऐसे समाचार आये जैसे प्रधानमंत्री जी ने ही चीतों को पहली बार भारत में जन्म दिया है। पहले उन्हें पिंजड़ों में रखने के समाचार आये फिर पिंजड़ों में से छोड़ने की खबर आई। अब हालात यह है कि 6 चीते और उनके शावक मौत के शिकार हो चुके हैं। वन विभाग की जांच में कहा गया है कि यह गर्मी और कुपोषण याने भूख व गर्मी बर्दाश्त नहीं कर पाये इस कारण इनकी मौत हुई है। परन्तु इतनी बड़ी घटना पर कि सरकार अपने मेहमान चीतों को खाना उपलब्ध नहीं करा पारही, उन्हें गर्मी से नहीं बचा पा रही, इस पर देश और प्रदेश की सरकार मौन है। मैं प्रधानमंत्री जी से अपील करूँगा कि वे एक ईवेंट चीतों का कब्रिस्तान बनाने पर भी बनवायें और देश को बताये चीते भारत में कैसे मर रहे हैं और उनकी पार्टी की सरकारों का कितना महान योगदान है। दरअसल में संसद भवन का लोकार्पण कौन करे इसके प्रति चिंतित नहीं हूँ। बल्कि मेरी यह चिंता है क्या यह नया संसद भवन बनना चाहिए? क्या इसकी अभी आवश्यकता थी? इस पर जो भारी राशि खर्च हुई है? क्या वह राष्ट्रीय अपराध नहीं है? अब संसद भवन के लोकार्पण के समय समर्थक खेमों से यह सूचनाएं प्रसारित हुई है कि इसका मूल प्रस्ताव तो काफी वर्ष पहले कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में तैयार हुआ था और वर्ष 2012 में कांग्रेस सरकार ने इसका आंकलन आदि कराया था। मैं मान लेता हूँ यह दोनों ही बातें सही होगी परन्तु क्या कांग्रेस के सारे कामों का समर्थन या उन्हें पूरा करने का वायदा करके ही भाजपा सरकार में आई थी? एक तरफ श्री नरेन्द्र मोदी जी कांग्रेस मुक्त भारत की बात करते हैं। दूसरी तरफ कांग्रेस के प्रस्ताव या कार्यक्रमों को पूरी निष्ठा के साथ पूरा करने का काम करते हैं और वे चाहते तो आराम से इस प्रस्ताव को निरस्त कर सकते थे तथा पुराने संसद भवन में आवश्यक सुधार अगर कोई जरूरी थे तो कर उसी में काम चला सकते थे। यह संसद भवन लुटियन्स जोन में है जिसका डिजाइन सर्वश्रेष्ठ माना गया है तथा जिसमें हरियाली व पर्यावरण को बचाने तथा प्रदूषण रोकने के लिये निर्माण पर रोक है। परंतु इस कदम लुटियन्स जोन की शुद्धता ही खत्म हो गई। प्रधानमंत्री जी ने न केवल नये संसद में विस्ता प्रोजेक्ट के नाम से लगभग 2 हजार करोड़ खर्च कर, नये प्रधानमंत्री आवास, नये सचिवालय आदि बनाने वालों जाना बनाई है, जिसका छोटा सा हिस्सा संसद भवन है। उसके लिये यह तरक्कि दिया जा रहा है कि अभी मंत्रालय न सचिवालय जो अलग-अलग है अब एक जगह हो जायेंगे। यह कोई बड़ा काम न संकट नहीं था। आज कल सारी दुनिया में भवनों के ऊपरी भागों के जोड़ दिया जाता है। वैसे भी अब न कागज युग है फाईलों के आने जाने का। बल्कि अधिकांश काम तो अब डिजिटलाइज हो रहे हैं। जिसका प्रचार प्रसार स्वप्रधानमंत्री जी कर रहे हैं। इन नये निर्णयों के पीछे जो प्रेरणा काम कर रही है, उसे बारे में कई प्रकार की जनचर्चायें हैं। एक जन चर्चा यह है कि निर्माण के नए कानून पर 20 प्रतिशत तक कमीशन जाता और फिर वह राजनैतिक और चुनाव फैसले में तब्दील हो जाता है।

अगर यह जनश्रुति सही है तो इसका मतलब हुआ की संसद भवन के निर्माण व्यय से 180 करोड़ और संपूर्ण विस्ता प्रोजेक्ट से 4 से 5 हजार करोड़ रुपये कमीशन में जायेगा। लुटियन जोन्स विनियोजित काल में किसानों की जमीनों का लेकर हरियाली के बीच से बनाया जायगा। ताकि हरियाली और पर्यावरण सुरक्षित रहे तथा प्रदूषण कम हो परन्तु अब नये निर्माणों से पर्यावरण व हरियाली की बलि चढ़ा दी जायेगी।

© 2013 Pearson Education, Inc.

लिव-इन रिलेशनशिप पर फिर सवालिया निशान



अशोक भाटिया

हत्या हुई, उसने लिव-इन रिलेशनशिप पर सवालिया निशान लगा दिए हैं। इन संबंधों में बर्बादता, वहशीपन और इंसानियत को शर्मसार कर देने की सारी मर्यादाएं टूट गई हैं। नूरांस तरह से हत्या के ऐसे मामले यह सोचने को मजबूर कर देते हैं कि कोई इंसान अपनी ही प्रेमिका के साथ ऐसी दरिंदगी कर सकता है। बीते साल दिल्ली के श्रद्धा हत्याकांड ने शुरू हुआ सिलसिला अब भले ही मुंबई की सरस्वती तक पहुंच गया हो, लेकिन बीच में कई ऐसी युवतियां हैं, जो लिव-इन रिलेशन के नाम पर भेट चढ़ गईं। मंगलवार को मुंबई में सामने आए सरस्वती हत्याकांड ने पूरे देश को झकझोर दिया। हाल ही में महाराष्ट्र के मुंबई में एक 56 साल के व्यक्ति मनोज साने ने 32 साल की युवती पापानी जी द्वारा बता दी। उदाहारण है जिसमें दिल भर जाने पर लड़के ने अपने साथ लिव-इन रिलेशनशिप रह रही लड़की की बर्बादी पुर्ण तरीके से हत्या कर दी। लगातार इस प्रकार के सनसनीखेज मामले सामने आने के बाद एक बार फिर से ये बहस छिड़ गई है कि लिव-इन रिलेशनशिप में रहना लड़कियों के लिए कितना सुरक्षित रह गया है? सवाल ये भी है कि ऐसे रिश्तों में हत्या की कई वारदातें होने के बाद भी पश्चिमी सभ्यता वाली इस संस्कृति का प्रचलन भारत में इतनी तेजी से अखिर क्यों बढ़ रहा है? गौरतलब है कि बीते तीन महीने में दिल्ली में यह दूसरा ऐसा मामला है, जब लिव-इन में रह रही अपनी पार्टनर की हत्या करके आरोपी ने उसके शव को फ्रिज में छुपाकर रख दिया।

22 साल की चिन्हियां गाढ़ तक किकातिल कितना भी चतुर क्यों न हो लेकिन उसका जुर्म बहुत ज्यादा दिनों तक छुपा नहीं रहता और कानून के लंबे हाथ उसे अपने शिक्कजे में कस ही लेते हैं। ऐसा ही इस मामले में भी हुआ लेकिन सवाल है कि ऐसी कितनी श्रद्धा। पिछले दो दशक में हमारे यहां जिस तेजी से लिव-इन रिलेशनशिप का कल्चर बढ़ रहा है, वो चौकाने के साथ ही चिंताजनक भी है। इसलिये कि कुछ महानगरों को छोड़ दें, तो ऐसे रिश्ते को आज भी पूरी तरह से सामाजिक मान्यता नहीं मिली है, फिर भी नौकरी पेशा युवतियों में इस तरह की रिलेशनशिप को अपनाने का क्रेज तेजी से बढ़ा है। शायद इसकी बड़ी वजह ये है कि इसमें शादी के रिश्ते जैसा कोई बंधन नहीं है और दोनों को अपनी मर्जी से जीने की अन्तर्नी विनाशकी गाढ़ तक

कानूनी मान्यता दे रखी है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसलों के जरिए ऐसे रिश्तों के क्रानूनी दर्जे को साफ़ किया है। साल 2006 के एक केस में फैसला देते हुए शीर्ष अदालत ने कहा था कि, इव्यक्त होने के बाद व्यक्ति किसी के भी साथ रहने या शादी करने के लिए आजाद है। उस फैसले के साथ ही लिव-इन रिलेशनशिप को क्रानूनी मान्यता मिल गई।

अदालत ने कहा था कि कुछ लोगों की नजर में 'अनैतिक' माने जाने के बावजूद ऐसे रिश्ते में रहना कोई 'अपराध नहीं है।' सुप्रीम कोर्ट ने अपने इसी फैसले का हवाला साल 2010 में अधिनेत्री खुशबू के 'प्री-मैरिटल सेक्स' और 'लिव-इन रिलेशनशिप' के संदर्भ और समर्थन में दिए गए बयान के मामले में भी दिया था। अगर लिव-इन रिलेशन में बच्चा ऐसा होता है, तो यारी के दबाव के कारण देश के प्रमुख कोचिंग हब बने राजस्थान के कोटा में तो अक्सर छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की घटनाएं सामने आती ही रहती हैं, अब नामीगिरामी इंजीनियरिंग और मेडिकल संस्थानों में भी छात्रों द्वारा आत्महत्या किए जाने के बहुते मामले समाज को झकझोरने लगे हैं। छात्रों में आत्महत्या की यह बढ़ती प्रवृत्ति अब सरकार के साथ-साथ समाज को भी गंभीर चिंतन-मनन के लिए विवश करने हेतु पर्याप्त है। कुछ मामलों में परीक्षाओं के दौरान प्रश्नपत्र सही से हल नहीं कर पाने और कई बार परीक्षा की समुचित तैयारी नहीं होने पर भी छात्र हताश होकर जान देने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों

शरस्वती का हत्या कर दा शुरूआती जानकारी आई कि बीते कुछ सालों से वे दोनों लिव-इन में रह रहे थे। हालांकि गिरफ्तार होने के बाद मनोज साने दावा कर रहा है कि वह उसकी बेटी जैसी थी। मनोज साने ने पहले सरस्वती की हत्या की और फिर शव को चेनसॉ (पेड़ काटने वाली मशीन) से 100 टुकड़ों में काट दिया। बदबू नहीं आए इसलिए वह शव के टुकड़ों को प्रेरश कुकर में उबालकर मिक्सर में पीस देता था और कुत्तों को खिला देता था। ये घटना 8 जून 2023 को सामने आई है। सरस्वती हत्याकांड ने अतीत के अन्य सभी हत्याकांड की याद ताजा कर दी, जिसमें कई मशहूर चर्चित हत्याकांड ने लोगों में गुस्सा भर 25 साल की निकका बादव का शब वेलेंटाइन डे यानी 14 फरवरी को उसके प्रेमी साहिल गहलोत के परिवार के एक रेस्टरां में फ्रिज के साथ खत्म होता है लेकिन अक्सर इसका शिकार लड़की ही बनती है। साल 2018 में एक सर्वे हुआ था। इस सर्वे में शामिल 80 फौसदी लोगों ने लिव-इन रिलेशनशिप को किसी भी तरह से गलत न मानते हुए इसका खुलकर सपोर्ट किया था। इनमें से 26 प्रतिशत ने कहा था कि अगर मौका मिला, तो वो भी लिव-इन रिलेशन में रहना ही पसंद करेंगे। हालांकि फिलीपींस, फ्रांस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, स्कॉटलैंड, यूके, अमेरिका समेत दर्जन भर देशों में अलग-अलग कानूनी परिभाषाओं के अंतर्गत लिव इन रिलेशनशिप जागादा निलंत हालाकर इसी आजादी की शुरूआत इगड़े से होती है, जिसका अंजाम किसी बड़े जुर्म के साथ खत्म होता है लेकिन अक्सर इसका शिकार लड़की ही बनती है। हालांकि, अगर कोई शादीशुदा व्यक्ति बिना तलाक लिए किसी के साथ लिव-इन में रहे तो ये गैर-कानूनी माना जाता है। लेकिन दो साल पहले पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने एक मामले में फैसला दिया था कि, 'शादीशुदा होने के बावजूद लिव-इन में रहना' कोई जुर्म नहीं है और इससे भी फर्क नहीं पड़ता कि पुरुष ने तलाक की प्रक्रिया शुरू की है या नहीं। पर, सच तो ये है कि अभी भी समाज में लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले लोगों को अच्छी नजरों से नहीं देखा जाता है।

बिना कुर्सी का नेता एकदम फर्जी कागज की तरह होता है। समर्थक भी ऐसे जो गुड़ खत्म होते ही उड़ने वाली मक्कियों की तरह कहीं और भिन्नभिन्नाने लगते हैं। इस मामले में मक्कियाँ समर्थकों से कहीं अधिक बेहतर होती हैं। वे कम से कम गुड़ खत्म होने के बाद भी कुछ देर वहीं ठहरकर जमीन पर लगे गुड़ की बढ़ता अवसाद उनके आत्महत्या करने का कारण बन जाता है। इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों में तो सीटें बहुत होने के कारण अब बहुत ज्यादा प्रतिसर्प्धा होने लगी है, वहाँ दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे शिक्षण संस्थानों में सामान्य स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए भी अब जबरदस्त मारामारी होने लगी है। ऐसे में छात्र अपनी शिक्षा और भविष्य को लेकर गहरे असमंजस में रहते हैं। किसी को कैरियर या मुश्किल से बाहर नहीं निकल सकता। उन्हें यह जानें चाहिए।

मिठास का 'फाल गुड़' करन म काइ काताहा नहीं बरतती। ऐसे ही एक नेता थे। कुर्सी क्या गई माने बदन से जान निकल गई। इससे अधिक दुख अपने चमचों की गायब होती संख्या को लेकर थी। दुख भी क्यों न हो, कुर्सी पर बैठकर चमचों के लिए इतने पाप किए कि अगले सात जन्मों का कोटा मात्र छह महीने में भर लिया था। जितने ज्यादा पाप करते उतने अधिक चमचे बढ़ते। पाप और चमचों का संबंध शेयर मार्केट की तरह होता है। अब नेता जी के पास पाप करने का दोहरा दौरा है। दोहरा दौरा पाप का बढ़ावा देता है।

पूछ-पूछ कर गल मिलन आ जाता है। कुछ यहीं हाल था इस नेता जी का। पहले लकवा के शिकार हुए फिर बोलने की शक्ति खो बैठे। कहत हैं कि कोई भी नेता एक बार नहीं हजार बार अपनी खोई हुई संपत्ति फिर से प्राप्त कर सकता है, बर्तने कि उसकी बोलने की शक्ति बची रहे। अध्यापक के लिए चॉक पीस, डॉक्टर के लिए स्टेथस्कोप, सफाई कर्मचारी के लिए झाड़ का जो महत्व होता है, वही महत्व नेता के लिए उसके बोलने की शक्ति का होता है। नेता की गिरती सेहत को देखता देखता दूसरा दूसरा आया। एक बदल परिवर्तन।

पिता जा के दशन करवाता। यह सिलसिला कुछ दिन तक चलता रहा। इधर नेता जी को भ्रम हुआ कि यह भीड़ उन्हीं से मिलने आती है, सो उनकी सेहत सुधरने लगी। डॉक्टर आश्चर्यचकित थे।

किंतु इधर दो-तीन दिन से लगातार बारिश होने लगी। भीड़ न जुट सकी। यह नेता जी के लिए असह्य हो चला। उन्हें भीड़ को न देख पाने का दौरा पड़ा और दुनिया से चल बसे। पुत्र के पूछने पर जब डॉक्टर ने नेता के डेड बैंडी की जाँच की तब उन्होंने मरने का दराघ 'भीड़ अपैना' बताया।

नाकरा का चिता ह ता काइ पारिवारिक वित्तीय संकट से जूझ रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े देखें तो जहां 2020 में देशभर में कुल 12526 छात्रों ने आत्महत्या की, वहीं 2021 में यह आंकड़ा बढ़कर 13089 हो गया। वैसे आत्महत्या की यह समस्या अब केवल छात्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि देश में आत्महत्या के सामलों में जिस प्रकार साल द्वारा साल द्वाल आ पाता। जहां तक छात्रों का बात तो छात्रों के बढ़ते आत्महत्या मामलों के लिए कहीं न कहा अभिभावक भी दोषी हैं। दरअसल भर्म मिलता है कि ज्यादातर माता-पिता या अभिभावक अपने बच्चों के क्षमता और अभिरुचि को समझ पाते और उन जरूरत से ज्यादा अपेक्षाएं रखते हुए, परीक्षा के समय भी उनके मनोदृश्य से अनुभित रहते हैं।

कुर्सी और मर्जी



Page 6

बिना कुर्सी का नेता एकदम फर्जी कागज की तरह होता है। समर्थक भी ऐसे जो गुड़ खत्म होते ही खयों की तरह कहीं ओर हैं। इस मामले में मक्खियाँ अधिक बेहतर होती हैं। वे खत्म होने के बाद भी कुछ जमीन पर लगे गुड़ की 'गुड़' करने में कोई कोटाही ही एक नेता थे। कुर्सी क्या थे जान निकल गई। इससे नेते चमचों की गायब होती थी। दुख भी क्यों न हो, चमचों के लिए इतने पाप सात जन्मों का कोटा मात्र रह लिया था। जितने ज्यादा अधिक चमचे बढ़ते। पाप बंबंध शेयर मार्केट की तरह जी के पास पाप करने का तैयारी तात्पार नहीं रहता। भगवान का नाम जपने और पुण्य कमाने के लिए उन्हें उन्हीं की हालत पर छोड़कर रफ़ चक्कर हो गए। यह देख नेता जी की तावियत दिन-ब-दिन बिगड़ने लगी। राजनीति का चमत्कार कहिए या फिर संयोग कि नेता जब तक कुर्सी पर होता है तब तक उसे कोई बीमारी तो क्या छोंक तक उसे छूने से डरती है।

जैसे ही कुर्सी से उतरे सारी बीमारियाँ पता पूछ-पूछ कर गले मिलने आ जाती हैं। कुछ यहीं हाल था इस नेता जी का। पहले लकवा के शिकार हुए फिर बोलने की शक्ति खो बैठे। कहते हैं कि कोई भी नेता एक बार नहीं हजार बार अपनी खोई हुई संपत्ति फिर से प्राप्त कर सकता है, बशर्ते कि उसकी बोलने की शक्ति बची रहे। अध्यापक के लिए चॉक पीस, डॉक्टर के लिए झाड़ का जो महत्व होता है, वही महत्व नेता के लिए उसके बोलने की शक्ति का होता है। नेता की गिरती सेहत को देखता रामानुजनाथ एवं विजय मोर्या

था। अभी वह राजनीति में अर्ध-प्रशिक्षित था। पूर्ण प्रशिक्षित होने तक पिता कम नेता जी के अनुभव की अधिक आवश्यकता थी। इसलिए पहुँच हुए डॉक्टर से पहुँचा हुआ इलाज करवा रहा था। दुर्भायवश नेता जी जिंदगी से मौत की पहुँच की ओर बड़ी तेजी से दौड़ रहे थे। डॉक्टर ने हाथ खड़े कर दिए। पुत्र को एक उपाय सूझा। उसने हर दिन छोटी-मोटी पार्टी के बहाने लोगों की भीड़ जुटाता और उन्हें पिता जी के दर्शन करवाता। यह सिलसिला कुछ दिन तक चलता रहा। इधर नेता जी को भ्रम हुआ कि यह भीड़ उन्हीं से मिलने आती है, सो उनकी सेहत सुधरने लगी। डॉक्टर आश्चर्यचिकित थे।

किंतु इधर दो-तीन दिन से लगातार बारिश होने लगी। भीड़ न जुट सकी। यह नेता जी के लिए असह्य हो चला। उन्हें भीड़ को न देख पाने का दौरा पड़ा और दुनिया से चल बसे। पुत्र के पूछने पर जब डॉक्टर ने नेता के डेड बॉडी की जाँच की तब उन्होंने मरने का बताया 'भीड़ अैन्ट' बताया।

कारण अब बहुत ज्यादा प्रतिसर्था होने लगी है, वहीं दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे शिक्षण संस्थानों में सामान्य स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए भी अब जबरदस्त मारामारी होने लगी है। ऐसे में छात्र अपनी शिक्षा और भविष्य को लेकर गहरे असमंजस में रहते हैं। किसी को कैरियर या नौकरी की चिंता है तो कोई पारिवारिक वित्तीय संकट से जूझ रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े देखें तो जहां 2020 में देशभर में कुल 12526 छात्रों ने आत्महत्या की, वहीं 2021 में यह आंकड़ा बढ़कर 13089 हो गया। वैसे आत्महत्या की यह समस्या अब केवल छात्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि देश में आत्महत्या के मामलों में जिस प्रकार माल दर माल उल्लंघन आ

करीब 90 फीसदी मामलों व प्रमुख कारण है लेकिन सात आत्महत्याओं के लिए अवसर नहीं ठहराया जा सकता। उन मुताबिक आत्महत्या करने विचार किसी इंसान के अंदर तपनपता है, जब वह किस मुश्किल से बाहर नहीं निकल पाता। जहां तक छात्रों की बात तो छात्रों के बढ़ते आत्महत्या मामलों के लिए कहीं न कहा जाता अभिभावक भी दोषी हैं। दरअस अधिकांश मामलों में देखने वाली मिलता है कि ज्यादातर माता-पिता या अभिभावक अपने बच्चों वैसे आत्महत्या क्षमता और अभिरुचि को सात दंग से नहीं समझ पाते और उन जरूरत से ज्यादा अपेक्षाएं रखते हुए परीक्षा के समय भी उनके मनोदृष्टि से अनभिज्ञ रहते हैं।

गलाकाट प्रतिस्पध और छात्र आत्महत्या



यागश कुमार गायल

कोचिंग हब बने राजस्थान के कोटा में तो अक्सर छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की घटनाएं सामने आती ही रहती हैं, अब नामीगिरियां इंजीनियरिंग और मेडिकल संस्थानों में भी छात्रों द्वारा आत्महत्या किए जाने के बढ़ते मामले समाज को झकझोरने लगे हैं। छात्रों में आत्महत्या की यह बढ़ती प्रवृत्ति अब सरकार के साथ-साथ समाज को भी गंभीर चिंतन-मनन के लिए विवश करने हेतु पर्याप्त है। कुछ मामलों में परीक्षाओं के दौरान प्रश्नपत्र सही से हल नहीं कर पाने और कई बार परीक्षा की समुचित तैयारी नहीं होने पर भी छात्र हताश होकर जान देने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों से ऐसी दुखद घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। देश के युवा वर्ग और खासकर 18 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों में आत्महत्या की बढ़ती यह प्रवृत्ति बेहद चिंताजनक है। शिक्षा तथा कैरियर में गलाकाट प्रतिस्पर्धा और माता-पिता तथा शिक्षकों की बढ़ती अपेक्षाओं के चलते छात्रों पर पढ़ाई का बढ़ता अनावश्यक दबाव इसका सबसे बड़ा कारण है, जिसने छात्रों के समक्ष विकट स्थिति पैदा कर दी है। कई बच्चे इस दबाव को झेल नहीं पाते, जिसके चलते उनमें अवसाद पनपता है। कई अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि परीक्षाएं नजदीक आने के साथ ही छात्रों में चिंता और अवसाद बढ़ने लगता है और कछ मामलों में यही संख्या में आत्महत्या के मामले 1 से 29 वर्ष के लोगों में होते जबकि आत्महत्या का प्रयास करने वालों का आंकड़ा इस बहुत ज्यादा है। डब्ल्यूएचओ अंकड़ों के अनुसार दुनियाभर 79 फीसदी आत्महत्या निम्न अंमध्यवर्ग वाले देशों के लोग करते हैं और इसमें बड़ी संख्या ऐसी युवाओं की होती है, जिनके कान पर किसी भी देश का भविष्य टिक्का होता है। बीते वर्षों में दुनियाभर खुदकुशी की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं लेकिन भारत में आत्महत्याका आंकड़ा तो काफी चिंताजनक है। लोगों में अवसाद निरन्तर बढ़ रहा है, जिसके चलते ऐसे कुछ व्यक्ति आत्महत्या करते हैं जैसे हृदयविदारक कदम उठा बैठते हैं जीवन से निराश होकर आत्महत्या की बढ़ती दुष्प्रवृत्ति गंभीर चिंता व सबब बन रही है। मनोचिकित्सव के अनुसार जब भी कोई व्यक्ति या युवा गहरे मानसिक तनाव जूझ रहा होता है तो उसके व्यवहार में पहले की अपेक्षा कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं। ऐसे में आसपास मौजूद लोगों तक परिजनों की यह बहुत बड़ा जिम्मेदारी होती है कि वे ऐसे व्यक्ति अथवा युवा को इमोशनल मैटल या फिजिकल जैसी जरूरत हो, सहयोग करें, उसके मनोबेल बढ़ाने का प्रयास कराकि वह व्यक्ति स्वयं को अकेले महसूस न करे। मनोचिकित्सव के अनुसार आत्महत्या करने

बढ़ता अवसाद उनके आत्महत्या करने का कारण बन जाता है। इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों में तो सीटें बहुत होने के कारण अब बहुत ज्यादा प्रतिस्पर्धा होने लगी है, वहाँ दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे शिक्षण संस्थानों में सामान्य स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए भी अब जबरदस्त मारामारी होने लगी है। ऐसे में छात्र अपनी शिक्षा और भविष्य को लेकर गहरे असमंजस में रहते हैं। किसी को कैरियर या नौकरी की चिंता है तो कोई पारिवारिक वित्तीय संकट से जु़झा रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के ऑकड़े देखें तो जहाँ 2020 में देशभर में कुल 12526 छात्रों ने आत्महत्या की, वहाँ 2021 में यह आंकड़ा बढ़कर 13089 हो गया। वैसे आत्महत्या की यह समस्या अब केवल छात्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि देश में आत्महत्या के मामलों में जिस प्रकार साल दर साल उच्चाल आकाफी गंभीर समस्या है और आत्महत्या करने के पीछे अधिकांशतः अवसाद को जिम्मेदार ठहराया जाता है, जो ऐसे करीब 90 फीसदी मामलों में प्रमुख कारण है लेकिन सभी आत्महत्याओं के लिए अवसाद को ही पूरी तरह जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। उनमें सुनाविक आत्महत्या करने वाले विचार किसी इंसान के अंदर तपनपता है, जब वह किसी मुश्किल से बाहर नहीं निकल पाता। जहाँ तक छात्रों की बात तो छात्रों के बढ़ते आत्महत्या मामलों के लिए कहीं न कहा जाए अभिभावक भी दोषी हैं। दरअसल अधिकांश मामलों में देखने वाले मिलता है कि ज्यादातर माता-पिता या अभिभावक अपने बच्चों व क्षमता और अभिरूचि को समझ देंगे से नहीं समझ पाते और उन जरूरत से ज्यादा अपेक्षाएं रखते हुए परीक्षा के समय भी उनवें मनोदृष्टि से अनुभित रहते हैं।



गर्मी और बारिश का संधिकाल होता है आषाढ़ मास

इस महीने जल्दी उठना, नींबू और रसीले फल खाने से होता है बीमारियों से बचाव



आषाढ़ मास के कुछ दिन गर्मी तो कुछ बारिश वाले रहते हैं। इस दौरान मानसून भी पकिटब होने लगता है। इस कारण आषाढ़ को ऋतुओं का संधिकाल भी कहा जाता है। यानी इस महीने में गर्मी और बारिश दोनों मौसम का असर रहता है।

जिससे बीमारियों की आशंका और बढ़ जाती है। मौसम के संधिकाल में बीमारियों से बचने के लिए पूर्णांग में पंपराएं और आयुर्वेद में कुछ जरूरी बातें बालाइ गई हैं। जिनमें व्रत, स्नान और पूजा-पाठ के साथ कुछ नियम बताए गए हैं।

गर्मी और बारिश का संधिकाल

सेहत के नजरिए से आषाढ़ महीने में सावधानी रखनी चाहिए। ये महीना गर्मी और बारिश के संधिकाल में आता है। यानी इस दौरान ग्रीष्म ऋतु होती है साथ ही सूर्य के रोहणी नक्षत्र में आ जाने से वृद्धि काल भी रहता है। ये जिससे इन दिनों वातावरण में उमस और नमी बढ़ने लगती है। इसलिए इस महीने में रोगों का संक्रमण ज्यादा होता है।

आषाढ़ महीने में सेहत को लेकर खासतौर से सावधानी रखनी चाहिए।

सावधानियां: ब्याकर-ब्याकर नहीं

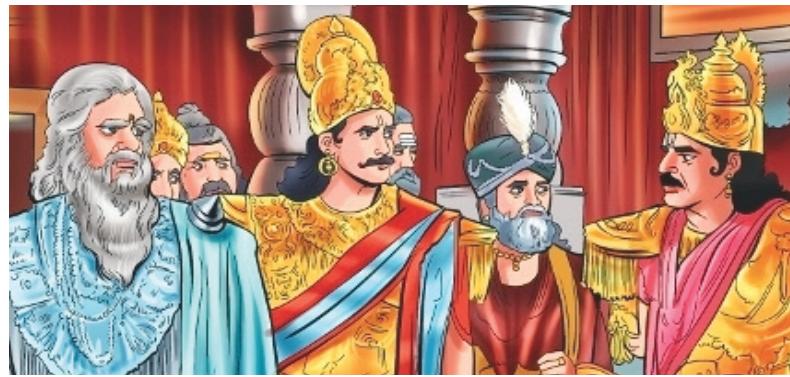
मौसम में बदलाव वाले इस महीने में पानी से संबंधित बीमारियां ज्यादा होती हैं ऐसे में इन दिनों साफ पानी का खासतौर से ध्यान रखा जाना चाहिए। आषाढ़ महीने में रसीले फलों का सेवन ज्यादा करना चाहिए। हालांकि बेल से पहरेज करें। पानी शक्ति को सही रखने के लिए कम तरी भूंक जीजें खानी चाहिए। आषाढ़ महीने में सौंफ, हींग और नींबू का सेवन करना फायदेमंद माना गया है। इस महीने में साफ-सफाई पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत होती है।

आषाढ़ के स्वामी सूर्य और वामन

ज्योतिष ग्रन्थों में बताया गया है कि आषाढ़ महीने के देवता सूर्य और भगवान विष्णु हैं। इसलिए इस महीने में भगवान विष्णु के वामन अवतार और सूर्य की विशेष पूजा करनी चाहिए। इनकी उपासना से विशेष फल मिलता है।

आषाढ़ महीने में सूर्य की उपासना से ऊर्जा के स्तर को नियंत्रित रखा जाता है। जिससे सेहत अच्छी रहती है और किसी भी तरह की बीमारी नहीं होती। भगवान विष्णु की उपासना से संतान और सौभाग्य प्राप्ति होती है।

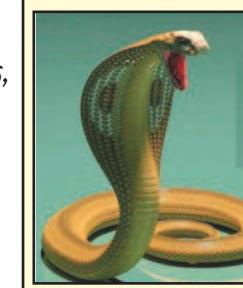
बलराम चाहते थे सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से हो



तुम्हारे कहने पर ही हमने अर्जुन का सलकार किया था। अज उसने हमारी बहन का अपहरण कर लिया है। ये तो उसने गलत काम किया है।

श्रीकृष्ण ने कहा कि इस समय आप गुरुसे में हैं और अर्जुन को मारना चाहते हैं। जरा सोचिए ऐसा करके आप अपनी बहन को विधान कर दो। अर्जुन कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। कुन्ती पुत्र को कौन संबंधी नहीं बनाना चाहिए। बड़े पैसे हमें ध्यान रखना चाहिए कि अपने परिवार में किसी के विवाह का नियंत्रण सिर्फ वर्तमान देखकर न लिया जाए। ये नियंत्रण लेते समय व्यक्ति के पिछले

कुंडली में कब बनता है काल सर्प दोष



ज्योतिष शास्त्र में काल सर्प दोष को बहुत ही अशुभ माना गया है। कहा जाता है कि जिस व्यक्ति की कुंडली में काल सर्प दोष होता है तो व्यक्ति को जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुंडली में काल सर्प दोष होने से व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक रूप से प्रभावित होता है।

1) जिस व्यक्ति को अक्षर सपने में मृत लोग दिखाई देते हैं। इनमें ही नींबू कुछ लोगों को तो यह भी दिखाई देता है कि कोई उनका गला दबा रहा है।

2) जिस व्यक्ति के जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ता है और जब उसको जरूरत होती है तब उसे अक्षलापन करना पड़ता है।

3) कालसर्प से पीड़ित व्यक्ति के कारोबार पर काफी नकारात्मक असर पड़ता है। इसे व्यापार में वाता वानी का सामना करना पड़ता है।

4) इसके अलावा नींद में शरीर पर सांप को रेंगते देखना, साप को खुद को डासते देखना।

5) वात-बात पर जीवनसाथी से वाद विवाद होता है। यदि रात में बार बार आपकी नींद खुलती है तो यह भी काल सर्प दोष का ही लक्षण है।

6) इसके अलावा काल सर्प दोष से पीड़ित व्यक्ति को सपने में बार-बार लाइट डिखाई दिखाई देता है।

7) काल सर्प दोष के व्यापक मानसिक और शारीरिक रूप से रोगों का सामना होता है। साथ ही सिर दर्द, त्वचारोग आदि भी कालसर्प दोष के लक्षण हैं।

कुंडली में कब बनता है काल सर्प दोष

ज्योतिष शास्त्र में काल सर्प दोष को

मणिबंध पर ऐसा निशान हो तो निलता है विरासत में खूब सादा धन



अगर सुंदर हों मणिबंध की रेखा और वह सीधे जाकर नुक पर्वत तक पहुंच जाए। साथ ही मणिबंध की पहले रेखा पर 'क्रॉस' या 'क्रॉस' का चिह्न हुआ हो तो जीवन के पहले हिस्से में परशानी का सामना करना पड़ता है। लेकिन मध्य और बाद तक चरण में उनका जीवन कीमी सुख-शांति के साथ व्यतीत होता है। साथ ही की निजात मिलती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध से कोई रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

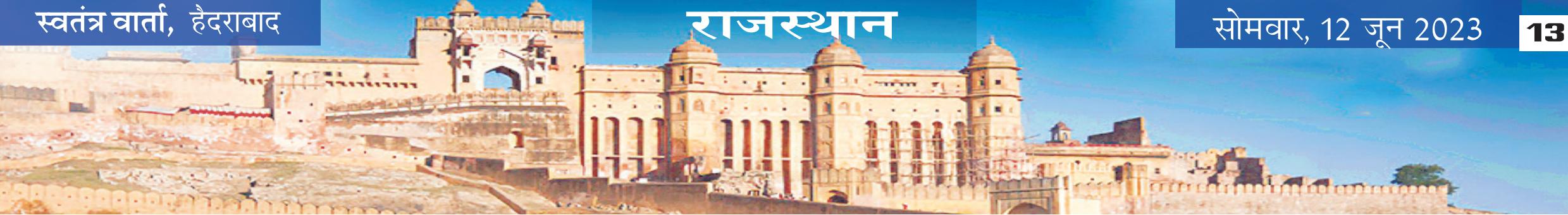
अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है।

मणिबंध रेखा के बीच में हो कोण का चिह्न

अगर मणिबंध की पहले रेखा के बीच में 'कोण' का चिह्न मौजूद हो तो व्यक्ति को जीवन के बीच में उनकी व्यक्ति की रेखा के बीच में होती है। उसकी व्यक्ति को जीवन में उनकी धनीता होती है। साथ ही परिवार में भी सुख-शांति बनी रहती है



पायलट का गहलोत पर तंज, कहा- मानसिक दिवालिया बताते हैं वसुधरा सरकार के घोटाले पर बोले- आज नहीं तो कल, ऊपर वाला न्याय जरूर करेगा

दौसा, 11 जून (एजेंसियां)

पिंडा, 11 जून (एजेंसियां)। पिंडा राजेश पायलट को पूर्णतयि पर राजस्थान के पूर्व डिस्ट्री सीएम सचिन पायलट ने एक बार अपने विशेषियों पर निशाना साधा है। दौसा में राजेश पायलट की मर्मिं के अनावरण के बाद सभा को संबोधित करते हुए सचिन पायलट ने गहलोत के बायन का जवाब दिया। उन्होंने कहा कि हम गरिबों की मदद करें तो केंद्र सरकार कहती है कि आर्थिक दिवालिया हो जाएंगे और मैं उन नौजवानों की मदद करूँ, जिनके साथ धोखा हुआ है तो कहते हैं कि मानसिक दिवालिया हो जाएगा। सच्चे मन से गरीब, नौजवानों की मदद करने के लिए बड़ा दिल होना चाहिए। खजाना हमारे पास है कि उनकी हम मदद करें।

वहीं वसुधरा सरकार के घोटालों का जिक्र करते हुए पायलट ने कहा कि पांच साल प्रदानशक्ति रहा तो सरकार के दोनों खट्टे कर दिए। मैंने साल के 365 दिन वसुधरा सरकार का विशेष किया। कभी कोई गलत बात नहीं कही, लेकिन



यदि उन्होंने खान आवंटन की, मामला उठा तो कैसल कर दिया, लेकिन जांच तो होती चाहिए।

किसी ने सही कहा है कि हर गलत सज्ज मारीजात है। हमारे आपस में कैसे भी संबंध हो, सबसे बड़ा न्याय नीली छती वाला देता है।

आज नहीं तो कल न्याय जरूर मिलेगा। पायलट दौसा शहर के गुर्जर छात्रावास में पूर्व कैरियर मंत्री राजेश पायलट की पूर्णतयि अपना दामन सफे रखा है, यह राजनेता वहीं बड़ी सफलता है। पायलट के भाषण की 3 बड़ी बाइंगें...

1. मैं पैछे हटने वाला नहीं हूँ

मैंने जो आवाज उठाई है, उसमें पैछे हटने वाला नहीं हूँ। हम किसी पद पर हो या न हो, जिनका होशा रखना जरूरी है। बैबकी से बोलाना, सच्चाई और इमानदारी के साथ विपरित परिस्थितियों में समझौता न करना राजेश पायलट ने सिखाया है। भगवान की कृपा है कि जो मेरी आत्मा बोलती है, वही जनता भी बोलती है।

2. राजनीति में बात रखना जरूरी है

परिस्थिति कोई भी, आप लोगों के लिए संबंध करना, न्याय दिलाने का बाद कल भी था, आज भी है, कल भी रहना। राजनीति में बात रखना जरूरी है। बैबकी से बोलाना, सच्चाई और इमानदारी के साथ विपरित परिस्थितियों में समझौता न करना राजेश पायलट ने सिखाया है। भगवान की कृपा है कि जो मेरी आत्मा बोलती है, वही जनता भी बोलती है।

3. भविष्य में निराशा दिखे तो

मेहनत करने का मन नहीं करता

राजस्थान और देश को गांधीनीति में ब्रह्म लोगों और भ्रष्टाचार की कोई जगह नहीं है। भविष्य में यदि निराशा दिखती है तो मेहनत करने का मन नहीं करता है। मूँझे भी राजनीति में 20 साल हो गए, मैंने हमेशा नौजवानों का तंत्र करते रखा था? मेरे कलहे क्या थे? मेरी आवाज में बुलंदी दौसा के लोगों के कारण है। मैंने कभी ऐसा कोई काम नहीं है।

मंत्री राजेंद्र गुदा को भाषण देने वाले

सभा में कौंग्रेस जिलाध्यक्ष

रामजीलाल ओढ़े ने मंत्री राजेंद्र सिंह गुदा को भाषण देने के लिए नाम अनाउंस किया तो समने मौजूद भोड़े ने जोरदार तालियां बजाईं। इसी बीच सचिन पायलट अपनी कुर्सी से खड़े हुए और गुदा के कान में कोई बात कहते हुए धूप भाषण देने के लिए माइक स्टैंड पर जग जाए।

भगवान जा रहा है कि सचिन पायलट को कायरिक पर जग अपने पैतृक गांव बैंडपुरा के लिए निकलना था इसलिए समय कम होने की बात कहते हुए भूप भाषण देने से गुदा को रोक दिया।

राजेश पायलट को श्रद्धांजलि देने के लिए बंडना स्थित स्मारक पर चिकित्सा मंत्री परस्यादी लाल मीणा, महिला बाल विकास मंत्री ममता भूषण, परिवहन मंत्री बूजेंद्र ओढ़ा, खाद्य एवं नागरिक आपूर्वी मंत्री प्रताप सिंह खानरियावास, मंत्री हेमराम चौधरी, कुमी विपणन राज्य मंत्री मुशरीलाल मीणा पहुंचे थे।

जयपुर में नकली घी की फैक्ट्री पकड़ी सरस सहित कई ब्रांडेड कंपनियों के नाम से मार्केट

सप्लाई, 3 हजार लीटर माल बरामद



जयपुर, 11 जून (एजेंसियां)। जयपुर के चांदपोल में नकली घी बनाने की फैक्ट्री पकड़ी गई है। वहां से 3 हजार लीटर तैयार नकली घी और करीब 4 हजार लीटर तैल (रिफाइंड और पॉम ऑयल) जबत किया गया है। शनिवार शाम को यह कारंबाई फूड एंड सेप्टी डिपार्टमेंट की टीम ने की।

टीम ने जबत किए नकली घी के सैपल लैब में जांच के लिए भिजाया है। पकड़ा गया घी सीरस, कृष्णा और महान जैसे ब्रांड के नाम से बाजार में बेचा जा रहा था। इनकी पैकिंग का तरह होती है। मौके से फैक्ट्री संचालक संजय शर्मा को गिरफ्तार किया गया है।

स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने जांच के लिए ब्रांड के उपयोग करने से संबंधित मुकामों दर्ज किया। इसमें नामी ब्रांड के नकली रैपर, टीम का उपयोग व एपाराक के उपयोग के लिए ब्रांड के घोटालों की बोलती थी।

सांसद की मीटिंग में मंडल अध्यक्ष का हांगामा बोले- बताइए सांसद निधि से क्या काम हुए, प्रचार में जनता को बताना होगा



संविधान में आरपीएससी को भंग करने का प्रावधान नहीं है।

अब वसुधरा राजे सरकार के खिलाफ एक मंडल अध्यक्ष के अनुसार, सचिन मिली थी कि चांदपोल स्थित स्मारक पर गोली नहीं होनी कानून देता है। जांच में ब्रह्म लोगों और भ्रष्टाचार की कानूनी घोषणा होनी की तैयारी है।

राजेश पायलट को श्रद्धांजलि देने के लिए बंडना स्थित स्मारक पर चिकित्सा मंत्री परस्यादी लाल मीणा, महिला बाल विकास मंत्री ममता भूषण, परिवहन मंत्री बूजेंद्र ओढ़ा, खाद्य एवं नागरिक आपूर्वी मंत्री प्रताप सिंह खानरियास, मंत्री हेमराम चौधरी, कुमी विपणन राज्य मंत्री मुशरीलाल मीणा पहुंचे थे।

उसमें अन्यथा लिया जाता है। इस टॉपिक को खत्त कर दीजिए। यह हमारी पार्टी की अंदरूनी मामला है।

सचिन पायलट ने 15 मई को अल्पीमेटम देकर गहलोत सरकार से तीन मांगें रखी थीं। पायलट ने बाबी कोई मुद्रा नहीं है। अब उसके लिए शिवालिक के बाबी को राजनीति करने की तैयारी है। इसके बाबी को राजनीति करने की तैयारी है।

सचिन पायलट ने 15 मई को अल्पीमेटम देकर गहलोत सरकार से तीन मांगें रखी थीं। पायलट ने बाबी कोई मुद्रा नहीं है। अब उसके लिए शिवालिक के बाबी को राजनीति करने की तैयारी है। इसके बाबी को राजनीति करने की तैयारी है।

बदलाव करने और पेपरलॉक से प्रावित बेरोजगारों को मुआवजा देने की मांग की थी। गहलोत ने सिंधिकैप टर्मिनल के लोकार्पण के बाबी पर मुआवजे की मांग को 'बुद्धि का दिवालियापन' बताकर खारिज कर दिया था। अरपीएससी को भांग करने की मांग पर एक इंटरव्यू के दौरान कहा था कि पायलट परिवार के मंबर हैं। उनकी घोषणा एक अध्यक्ष-मंबर चयन करने, इसके बाबी को राजनीति करने की तैयारी है।

बदलाव करने और पेपरलॉक से ब्रह्मलाल के लिए उपयोग करने की तैयारी है। उसके बाबी को राजनीति करने की तैयारी है।

ब्रह्मलाल के लिए रवाना होता है।

अपार्टी दूसरी संसद से उपलब्ध होती है। इसके बाबी को राजनीति करने की तैयारी है।

तभी पूर्व जिला प्रमुख के साथ

जारी है। जिसमें नामी ब्रांड के उपयोग के लिए ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों में संबंधित विवरण दिया गया है। इसमें नामी ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों में संबंधित विवरण दिया गया है।

भरतपुर, 11 जून (एजेंसियां)।

भरतपुर के बाजेंपी सांसद जानती है।

जिसमें नामी ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों में संबंधित विवरण दिया गया है।

जिसमें नामी ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों में संबंधित विवरण दिया गया है।

जिसमें नामी ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों में संबंधित विवरण दिया गया है।

जिसमें नामी ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों में संबंधित विवरण दिया गया है।

जिसमें नामी ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों में संबंधित विवरण दिया गया है।

जिसमें नामी ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों में संबंधित विवरण दिया गया है।

जिसमें नामी ब्रांड के लोगों में सांसद से इशारों म

श्रीशंकर ने पेरिस में लंबी कूद में हासिल किया तीसरा स्थान, प्रधानमंत्री मोदी ने की सराहना

पेरिस, 11 जून (एजेंसियां)। ओलंपिक विजेता यूनान के एम. टेंटोग्लू और स्विट्जरलैंड के साइमन एहमर क्रमशः 8.13 मीटर और 8.11 मीटर की छलांग के साथ श्रीशंकर से आगे रहे। श्रीशंकर डायमंड लीग में शीर्षतीन स्थानों में जगह बनाने वाले तीसरे भारतीय बन गए।

मुरली श्रीशंकर और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी - फोटो : सोशल मीडिया

लंबी कूद के भारतीय खिलाड़ी मुरली श्रीशंकर को 8.09 मीटर की छलांग के साथ पेरिस डायमंड लीग में तीसरा स्थान हासिल हुआ। उन्होंने पहली बार इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में पोडियम



हासिल किया। राष्ट्रमंडल खेलों के रजत पदक विजेता श्रीशंकर ने शुभकाम देर रात अपने तीसरे प्रयास में सर्वश्रेष्ठ छलांग लगाई।

ओलंपिक विजेता यूनान के एम. टेंटोग्लू और स्विट्जरलैंड के साइमन एहमर क्रमशः 8.13



मीटर और 8.11 मीटर की छलांग के साथ श्रीशंकर से आगे रहे। श्रीशंकर डायमंड लीग में शीर्षतीन स्थानों में जगह बनाने वाले तीसरे भारतीय बन गए।

श्रीशंकर से पहले भाला फेंक प्रयासों के लिए शुभकामनाएं।"

विकास गौड़ा थे। श्रीशंकर की प्रतिस्थाप्ति के दौरान ज्यादातर हवा चलती रही। श्रीशंकर ने दूसरी बार डायमंड लीग में हिस्से लिया। पिछले साल बारे मानोंका डायमंड में छठे स्थान पर रहे थे।

श्रीशंकर के शानदार प्रदर्शन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट कर उठे बधाई दी। पीएम मोदी ने लिखा, "श्रीशंकर मुल्ली ने पेरिस डायमंड लीग में शानदार प्रदर्शन कर उत्तम खेली रखा। उनके उत्तेजित छलांगों ने उठे एक प्रतिष्ठित कास्य पदक दिलाया। इससे भारत को डायमंड लीग में लंबी कूद में पहला पदक मिला। उठे बधाई और उनके आगामी प्रयासों के लिए शुभकामनाएं।"

भारत लगातार दूसरी बार डब्ल्यूटीसी फाइनल हारा कंगारूओं ने 209 रन से हराया, ऑस्ट्रेलिया सभी आईसीसी ट्रॉफी जीतने वाली पहली टीम बनी

लंदन, 11 जून (एजेंसियां)। टीम इंडिया

लगातार दूसरी बार वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप का फाइनल में चूहा गई है। टीम की ऑस्ट्रेलिया ने 209 रनों से हराया। 444 रन का टारगेट चेज तक हुए भारतीय टीम आखिरी दिन के फहले सेसेन में 234 पर अलाउट हो गया। दूसरी पारी में भारत का कोइंड वैटर 50+ का स्कोर नहीं कर सका। विशेष काली (49 रन) टॉप स्कोरर रहे।

लंदन के दो ओवल मैदान पर ऑस्ट्रेलिया ने अपनी दूसरी पारी 270/8 के स्कोर पर घोषित की और भारत को जीत के लिए 444 रन का टारगेट दिया। भारतीय टीम पहली पारी में 296 रन पर अलाउट हो गई, जबकि ऑस्ट्रेलियाई टीम पहली पारी में 469 रन अलाउट हुए थे।

शुरुआती चार दिनों का खेल...

पहला दिन... ऑस्ट्रेलिया 327/3, शतकवार डेंगमिथ नावाह लोटे पहले दिन ऑस्ट्रेलियाई टीम ने तीन विकेट पर 327 रन बनाए थे। टीम की ओर ट्रेविस 146 और स्टीव स्मिथ 97 रन पर नावाह लोटे। दूसरा दिन... शार्ट का टीम ऑफिंड फेल, कांड 20 का आंकड़ा पार नहीं कर सका 469 रन के स्कोर के जबाब में भारत की शुरुआत अच्छी नहीं रही। पहले तो रोहित और मिल ने कुछ अच्छे शार्ट्स दिखाए, लेकिन दोनों ओपनर्स अपनी पारी को बढ़ा नहीं सके। पहले रोहित शर्मा 15 रन बनाकर क्रैंप की निजी स्कोर पर रोहित के पैंडे-पैंडे तक दिया। वहाँ पुजारा और कोहली से उम्मीदें थीं, लेकिन ये दोनों दिविज 14-14 रन बनाकर चलते बने। 71 पर चार विकेट गंवाने के बाद रहाणे-जेडा ने 100 बॉल पर 71 रन की पार्टनरशिप कर कुछ देर भारतीय पारी को खिलाने से रोका। जेडा अर्धशतक से महज दो रन दूर थे, तभी लायन ने



उठे स्मिथ के हाथों कैच करकर पवेलेन भेज दिया। तीसरा दिन... जेडा-ठारूक ने फॉलोऑन से बचाया तीसरे ऑस्ट्रेलिया ने भारतीय टीम पहली पारी में 296 रनों की लोड बांध रखी थी। टीम ने स्टॉप्स तक दूसरी पारी में 469 रन अलाउट हुए थे।

मैच विनिंग फैक्टर: मिथ्ये-हेड की पार्टनरशिप पाइलन कुमाकरते में स्टॉप स्मिथ और ऑर्ट्रेसिस हेड की पार्टनरशिप ने अंतर पैदा किया। दोनों ने पहली पारी के दौरान चैथें विकेट के लिए 408 बॉल पर 285 रन की पार्टनरशिप की। इस साइडावारी की मदद से ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 469 रन बना लाले, इस स्कोर के दम पर अस्ट्रेलिया मैच के दूरपे ही दिन डाइविंग सीरीज में अंतर्वर्षीय दूसरी पारी में कैसे गिरे भारत के विकेट

बल्ले का बाहरी किनारा लेकर थर्ड स्लिप पर गए, जिसे ग्रीन ने एक हाथ से कैच किया। ऐसा लगा कि बॉल घास को छू गई है, ऐसे में फैलड अंपायर ने अपील थर्ड अंपायर के पास जीती और परामर्श मांगा। यहाँ अंगार अंगार ने गिल को आउट कराया। बाद में इस कैच पर क्रोमेंटर्सी हुई। दूसरा: नाथन लायन की मिडिल स्टॉप से बाहर जाती बॉल पर स्वीप करने के चक्कर में रोहित शर्मा एलबीडब्ल्यू हो गए। तीसरा: पैट कैमिंस की शार्ट पिच बॉल पर पुजारा अपरक्ट करना चाहते थे, लेकिन बॉल बल्ले का निचला किनारा छूक विकेटकीपर एलेक्स कैरी के दस्तानों में चली गई।

चौथा: ऑस्ट्रेलिया के ट्रॉट बॉल बॉल के स्टॉप बॉल ने फॉलोऑन से बचाया तीसरे ऑस्ट्रेलिया ने भारतीय टीम पहली पारी में 296 रनों पर अलाउट हुए थे। चौथा दिन... भारत जीत से 280 रन दूर शनिवार को कंगारूओं ने 123/4 रन के स्कोर पर 123 रन बनाए थे। मार्नस लायन 41 और कैमरन ग्रीन 7 रन पर नावाह थे। इसके दोनों के स्ट्रिंग पर गेंद लेख किया।

पहला दिन... ऑस्ट्रेलिया 327/3, शतकवार डेंगमिथ नावाह लोटे पहले दिन ऑस्ट्रेलियाई टीम ने तीन विकेट पर 327 रन बनाए थे। टीम की ओर ट्रेविस 146 और स्टीव स्मिथ 97 रन पर नावाह लोटे। दूसरा दिन... शार्ट का टीम ऑफिंड फेल, कांड 20 का आंकड़ा पार नहीं कर सका 469 रन के स्कोर के जबाब में भारत की शुरुआत अच्छी नहीं रही। पहले तो रोहित और मिल ने कुछ अच्छे शार्ट्स दिखाए, लेकिन दोनों ओपनर्स अपनी पारी को बढ़ा नहीं सके। पहले रोहित शर्मा 15 रन बनाकर क्रैंप की निजी स्कोर पर रोहित के पैंडे-पैंडे तक दिया। वहाँ पुजारा और कोहली से उम्मीदें थीं, लेकिन ये दोनों दिविज 14-14 रन बनाकर चलते बने। 71 पर चार विकेट गंवाने के बाद रहाणे-जेडा ने 100 बॉल पर 71 रन की पार्टनरशिप कर कुछ देर भारतीय पारी को खिलाने से रोका। जेडा अर्धशतक से महज दो रन दूर थे, तभी लायन ने दूसरी पारी में कैसे गिरे भारत के विकेट

आयरलैंड बनाम वेस्टइंडीज विनिंग फैक्टर: मिथ्ये-हेड की पार्टनरशिप पाइलन कुमाकरते में स्टॉप स्मिथ और ऑर्ट्रेसिस हेड की पार्टनरशिप ने अंतर पैदा किया। दोनों ने फॉलोऑन से चैथें विकेट के लिए 41-41 रन बनाए। भारत की ओर से रवींद्र जेडा को आउट स्ट्रॉकर एलेक्स कैरी के दस्तानों में चली गई। छठा: रहाणे गुड लेख से बाहर जाती छठे स्टॉप की बॉल का खेलना चाहते थे, लेकिन बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। पांचवां: बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। सातवां: लायन ने गुड लेख से टकराइ। चारवां: रहाणे गुड लेख से बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। नवां: नाथन लायन ने एक स्टॉप बॉल और अंदर की ओर से रवींद्र जेडा को आउट स्ट्रॉकर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। दसवां: लायन की बॉल पर सिराज रिवर्स स्वीप करना चाहते थे और उन्हें स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। एाटवां: विनेस ने एक स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। दोहरा गुड लेख से बाहर जाती छठे स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। तीसवां: लायन ने एक स्टॉप बॉल और अंदर की ओर से रवींद्र जेडा को आउट स्ट्रॉकर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। चारवां: विनेस ने एक स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। दोहरा गुड लेख से बाहर जाती छठे स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। तीसवां: लायन ने एक स्टॉप बॉल और अंदर की ओर से रवींद्र जेडा को आउट स्ट्रॉकर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। चारवां: विनेस ने एक स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। दोहरा गुड लेख से बाहर जाती छठे स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। तीसवां: लायन ने एक स्टॉप बॉल और अंदर की ओर से रवींद्र जेडा को आउट स्ट्रॉकर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। चारवां: विनेस ने एक स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। दोहरा गुड लेख से बाहर जाती छठे स्टॉप की बॉल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। तीसवां: लायन ने एक स्टॉप बॉल और अंदर की ओर से रवींद्र जेडा को आउट स्ट्रॉकर एलेक्स कैरी के हाथों चली गई। चारवां: विनेस ने एक स्टॉप की बॉल

